बी.ए. खण्ड - तृतीय (पत्र - पंचम)

डॉ० संतोष कुमार

चन्द्रगुप्त (नाटक) / जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद के नाटकों की विशेषताएँ

भारत में रंगमंच की प्राचीन परंपरा रही है जिसका प्रमाण हमें भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में मिलता है। इसमें नाटक और रंगमंच से संबंधित सभी पक्षों पर गंभीर और विस्तृत दृष्टि से विचार किया गया है। हिन्दी नाटकों का आरम्भ भारतेन्दु युग से माना जा सकता है। इससे पूर्व भी नाटकों की रचना की गयी। परन्तु इसमें नाटक के आधुनिक गुण का अभाव है। केवल 'जानकी मंगल' (शीतला प्रसाद त्रिपाठी) नाट्य गुणों से युक्त नाटक है।

द्विवेदी युग में हिन्दी नाट्य साहित्य ह्रासोन्मुख रहा। इसके बाद जयशंकर प्रसाद ने हिन्दी साहित्य को नाट्य साहित्य से समृद्ध किया। वे बहुमुखी प्रतिभा के थे। इनके ऐतिहासिक नाटकों का हिन्दी साहित्य में प्रयोग सफल रहा। जो हिन्दी साहित्य में मील के पत्थर साबित हुआ। जयशंकर प्रसाद हिन्दी के युग प्रवर्तक नाटककार माने जाते हैं। जिन्हों ने भारत के स्वर्णिम अतीत को अपने नाटकों की कथावस्तु बनाकर भारतीय सभ्यता-संस्कृति को संरक्षित करने करने का सफल प्रयास किया। इनके हिन्दी नाट्य साहित्य में योगदान को देखते हुए विद्वानों ने इन्हें सम्मान देते हुए इनके रचना काल को प्रसाद युग की संज्ञा दी। जयशंकर प्रसाद मूलत: कवि थे। जिस कारण उनके नाटकों में काव्यात्मकता का समावेश हुआ है। प्रसाद ने 08 ऐतिहासिक, तीन पौराणिक और दो भावात्मक, कुल 13 नाटकों की सर्जना की है।

प्रसाद की प्रमुख नाट्यकृतियों के नाम निम्न हैं! —— 01. सज्जन (1910 ई०), 02. कल्याणी परिणय (1912ई०) 03. प्रायश्चित (1912 ई०) 04. करुणालय (1913 ई०), 05. राज्यश्री (1918ई०) 06. विशाख (1921ई०) 07. अजातशत्रु (1922ई०), 08. कामना (1927ई०) 09. जनमेजय का नागयज्ञ (1926ई०) 10. स्कन्दगुप्त (1928ई०) 11. एक घूँट (1930 ई०), 12. चन्द्रगुप्त (1931 ई०) और 13. ध्रुवस्वामिनी (1933 ई०)